श्री महदेवर स्तुति

चंद्रशेखर सुमनसेंद्रपूजितचरणाहींद्र पदयोग्य वैराग्य । वैराग्यपालिसम- रेंद्र निन्नडिगॆ शरणेंबॆ ॥ 1 ॥

नंदिवाहन विमलमंदाकिनीधरनॆ वृंदारकेंद्र गुणसांद्र । गुणसांद्र ऎन्न मनमंदिरदि नॆलॆसि सुखवीयो ॥ 2 ॥

कृत्तिवासनॆ निन्न भृत्यानुभृत्य ऎन्नुत्त नोडय्य शुभकाय । शुभकाय भक्तरप मृत्यु परिहरिसि सलहय्य ॥ 3 ॥

नीलकंधर रुंडमालि मृगवरपाणि शैलजारमण शिवरूपि । शिवरूपि ऎन्नवर पालिसो नित्य परमाप्त ॥ 4 ॥

त्रिपुरारि नित्य ऎन्नपराधगळ नोडि कुपितनागदलॆ सलहय्य । सलहय्य बिन्नैपॆ कृपणवत्सल कृपॆयिंद ॥ 5 ॥

पंचास्य मन्मनद चंचलव परिहरिसि संचितागामिप्रारब्ध । प्रारब्धदाटिसु वि- रिंचिसंभवनॆ कृतयोग ॥ 6 ॥ मानुषान्नवनुंडु ज्ञानशून्यनु आदॆ एनुगति ऎनगॆ अनुदिन । अनुदिनदि ना निन्नधीनदवनय्य प्रमथेश ॥ 7 ॥ अष्टमूर्त्यात्मकनॆ वृष्णिवर्यन हृदयधिष्ठानदल्लि इरदोरो । इरदोरु नी दया- दृष्टियलि नोडो महदेव ॥ 8 ॥ मृडदेव ऎन्न कैपिडियॊ निन्नवनॆंदु बडव निन्नडिगॆ बिन्नैपॆ । बिन्नैपॆनॆन्न मन- दृढवागि इरलि हरियल्लि ॥ 9 ॥

उग्रतप ना निन्ननुग्रहदि जनिसिदॆ परिग्रहिसि ऎन्न संतैसु ।
संतैसु इंद्रियव निग्रहिपशक्ति करुणिसो ॥ 10 ॥

भागीरथीधरनॆ भागवतजनर हृद्रोग परिहरिसि निन्नल्लि ।
निन्नल्लि भक्ति चॆन्नागि कॊडु ऎनगॆ मरॆयदॆ ॥ 11 ॥

व्योमकेशनॆ त्रिगुणनाम देवोत्तम उमामनोहरनॆ विरुपाक्ष । विरुपाक्ष मम गुरु स्वामि नी ऎनगॆ दयवागॊ ॥ 12 ॥ लोचनत्रय निन्न याचिसुवॆ संततवु खेचरेशन वहन गुणरूप ।
गुणरूप क्रियॆगळालोचनॆय कॊट्टु सलहय्य ॥ 13 ॥ मातंगषण्मुखर तात संतत जगन्नाथविठ्ठलन महिमॆय । महिमॆयनु तिळिसु संप्रीतिंदलॆमगॆ अमरेश ॥ 14 ॥

भूतनाथन गुण प्रभातकालदलॆद्दु प्रीतिपूर्वकदि पठिसुव । पठिसुवर श्रीजगन्नाथविठ्ठलनु सलहुव ॥ 15 ॥